सच्ची कविता ही अच्छी कविता होती है...

अभिषेक कुमार यादव

चेहरे पर चमक बनाए वह रखते हैं...

कविता कैसी होनी चाहिए, यह वैसा ही प्रश्न है, जैसे यह पूछा जाए कि जीवन कैसा होना चाहिए? ऐसा नहीं है कि इस प्रश्न का जवाब नहीं है, बल्कि यह यूं है कि इसके बहुतेरे जवाब हैं। दुनिया का हर इंसान इसका जवाब अपने अनुसार दे सकता है। सबके अपने दृष्टिकोण हो सकते हैं। इसके बावजूद इससे कोई भी इनकार नहीं करेगा कि कुछ आधारभूत चीजें ऐसी हैं, जिनके शामिल होने से ही जीवन औचित्यपूर्ण बनता है। ऐसे में कोई निहिलिस्ट यह प्रश्न भी उठा सकता है, जीवन को औचित्यपूर्ण क्यों होना चाहिए? अब इस प्रश्न से जूझना दार्शनिकों का काम है। यहाँ तो मूल बात यही समझ में आती है कि जीवन का कोई औचित्य होना चाहिए। अब इस औचित्य का स्वरूप कैसा होना चाहिए? यह मनुष्यता के हित में होना चाहिए। इसे सत्याग्रही होना चाहिए। इसे करुणा और प्रेम से भरा होना चाहिए। इसी से कोई जीवन औचित्यपूर्ण बनता है और यह औचित्य ही अच्छे जीवन की कसौटी है।

कविता हमारे जीवन, सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। जीवन के इन्हीं पैमानों पर देखें तो कविता को सत्य के पक्ष में खड़ा होना चाहिए। इसे भी सत्याग्रही होना चाहिए। कम से कम इसके निर्माण की और अभिव्यक्ति की स्थितियां और प्रक्रिया सत्याग्रही होनी चाहिए। यदि कविता अपने निर्माण की प्रक्रिया में सत्य के साथ निर्मित नहीं हुई है तो वह कभी भी अच्छी कविता नहीं होगी। उसके शब्दाडंबर, भाषा का लोच, शैली की नाटकीयता और यहाँ तक कि अंतर्वस्तु भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते। अंतर्वस्तु का महत्त्व इस बात पर टिका हुआ है कि वह 'सत्य' के साथ ही निर्मित और अभिव्यक्त हुआ है। सभी महान रचनाएँ और उनके रचनाकार इसके प्रमाण हैं। यदि कोई कवि इस 'सत्य' को निभाने की कोशिश करता है तो वह सुंदर दिखने लगता है। आईनाम की कविताओं में यह 'सत्य' अपने होने का आभास कराता है। उनकी एक कविता है,'पापा मेरे'। वे लिखती हैं, "पापा मेरे/ मेहनत में तपकर/ कोयला होते जाते हैं/ फिर भी जाने कैसे-कैसे/ चेहरे पर चमक बनाए वह रखते हैं।"[1] यह चमक पिता की मेहनत और ईमानदारी ने उन्हें दी है। यही चमक कविता में भी होती है, यदि उसे 'सत्य' के भावबोध में अभिव्यक्त किया जाय। आईनाम इसकी कोशिश करती हैं और यही उनकी कविताओं को महत्त्वपूर्ण बनाता है।

'मीत' आईनाम का पहला कविता-संग्रह है। इसमें सौ पृष्ठों में कुल 92 कविताएँ प्रकाशित हैं। लगभग सभी कविताएँ छोटी कविताएँ हैं। जीवन के अनुभवों से लेकर सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन दृष्टि तक ये कविताएँ व्यापती हैं। एक और कविता का जिक्र करना जरूरी है। आईनाम की 'माँ' कविता भी भावों की सघनता लिए हुए है। 'माँ' के बारे में दुनिया भर में लिखा गया है और बहुत अच्छा लिखा गया है, लेकिन अक्सर वह मात्र भावों से भरा हुआ ही है। जब तक उन भावों की कोई ठोस जमीन न हो तब तक बात दूर तलक नहीं पहुँचती है। यह कविता भी सघन भावों से भरी होने के बावजूद 'भाववाद' की शिकार हो जाती है। पिता के बारे में लिखते समय उनके परिश्रम और दुनिया में उनके योगदान को चिन्हित करते समय कवि अक्सर माँ के मामले में घर, भाव और समर्पण से आगे नहीं बढ़ पाते। यह बात खटकती है।

मीत न मिला रे मन का...

कविता-संग्रह की शीर्षक कविता 'मीत' कठिन समय के साथ को समर्पित है। कठिन समय के साथ के बारे में दुनिया में न जाने कितनी कविताएँ, कहानियाँ और वाक़ये कहे गए हैं। हजारों मिथक गढ़े गए हैं। कठिन समय का

साथ ही मानव-सभ्यता को आगे बढ़ाता है। मनुष्य की मानवीय संस्कृति का मूलाधार है, गाढ़े वक़्त का साथ। आईनाम अपने 'मीत' से इसी साथ की उम्मीद करती हैं। अगर यह साथ मिले तो 'दुनिया बदल सकता हूँ मैं'। "मैं खेजड़ी के नए पौधों से/ रेतीली जमीन को दूर तलक/ धीरे-धीरे हरा-भरा करती जाऊँ।"[2] यह मीत कैसा है, कौन है? आईनाम लिखती हैं, मेरे मीत 'तुम आसमान हो।' मीतपन की बुनियादी शर्त मैत्री है। प्रेम एक गहन बंधुत्व के भाव की मांग करता है। बिना सच्चे बंधुत्व के प्रेम की भावना सदा ही अधूरी है। 'प्रेम पंछी' कविता में यह भाव प्रकट हुआ है। गहन बंधुत्व का यह भाव यदि प्रेम में उपस्थित है तो वह सदा के लिए रहता है। "मैं चाहती हूँ कि तन के सूख जाने के बाद भी/ मेरा मन भीगा रहे।"[3] यह चाहना तभी पूरी होगी जब प्रेम में मैत्री का भाव हो, त्याग करने का साहस हो।

ऐसे 'मीत' को पा लेना सहज नहीं है। यदि मिल भी गए किसी मोड़ पर तो उसे संभाल कर, संवार कर रख पाना एक अजब दुनियावी चुनौती है। ऐसे में मिलता है एक निर्जन अकेलापन। 'धूप' और 'टालमटोल' कविता में यह दिखता है। 'ओ मीत!' कविता में लेखिका लिखती हैं, "ओ मीत! जाते वक़्त बता के जाना/ दिल ढूँढ़ता है वहाँ/ जहां तुम अभी-अभी थे।"[4] 'उसका आखिरी खत' इस अकेलेपन और उसके दु:ख के गाढ़ेपन से भरी हुई कविता है। मीत की चाह में मीत जैसा कोई नहीं चाहिए क्योंकि कोई भी किसी के जैसा होता नहीं है, और हो नहीं सकता है। यहाँ तक कि चाहने वाला खुद जिसको चाहता है, उसके जैसा नहीं बनना चाहता है। क्यों बने...? यदि बन गया तो जिसको चाहता है, उसकी कसक कहाँ जाएगी? और अगर वह कसक ही नहीं रही तो प्रेम कहाँ समाएगा...?

ऐसे में 'स्वयं को अपना मीत बना लेना जीने का एकमात्र विकल्प है' सो 'कविताओं को अपना मीत बना लिया है।'... 'कविताएँ उन सायों को समेटती हैं, उसे खूबसूरत आकार देती हैं और मुझे प्रेम से सहलाती हैं।'... 'अंत में सब को अकेले ही जीवन का सामना करना होता है। हमारे हमदर्द मन के एक मोड़ तक ही साथ चल पाते हैं उससे आगे का सफर सबको अपने साथ ही तय करना होता है।' सच तो यह है कि आईनाम की ये कविताएँ मन को एक गहन उदासी से भर देती हैं और एक तीव्र जीवनानुभव से गुजारती हैं, इसीलिए बेचैन भी करती हैं।

बस निपट अकेलापन...

अकेलापन आईनाम की कविताओं के केंद्र में है। वह जम कर बैठ गया है। अब उसे बयान किया जा सकता है, हिलाया नहीं जा सकता। उसके साथ जिया जा सकता है। 'यह कौन सी ऋतु है?','मैं सूरज नहीं हूँ मीत' जैसी कविताएँ इसकी गवाही देती हैं। 'टूटन' कविता में यह अकेलापन बहुत तीव्रता से प्रकट होता है, "छोटी-छोटी मनोकामनाओं को/ जिंदा दफ़ना देने की टीस/ एक लड़की से पूछना चाहिए/ जो चाँदनी रातों में भीगी/ खूबसूरत सड़कों को/ बस मोड़ तक ही देखती रहती है/ फिर धीरे-धीरे देखना भी भूल जाती है।"[5] आलोकधन्वा की कविता 'भागी हुई लड़कियां' याद आती है। लड़कियां लाचार हैं, लेकिन सपने देखना बंद नहीं करती हैं।

अकेलापन मनुष्यों को अधूरा कर देता है। इस अधूरेपन के साथ जीना, जीने को मरने जैसा बना देता है। 'मौत आती है पर नहीं आती।' निर्मल वर्मा की कहानी 'परिंदे' अधूरी आत्माओं की कहानी है। लतिका यही सोचती है कि अगले बरस यह करेगी, वह करेगी। वह अगला बरस कभी नहीं आता क्योंकि उसके जीवन की खाली जगह को भरने वाला बरस बीत चुका है। इस अधूरेपन की बस एक आकांक्षा रह जाती है वह बरस आ जाय लेकिन बीता हुआ कब लौटा है? अगर वह बरस लौटा तो, "मैं तुम्हें वह तस्वीर दिखाऊँगी/ जिसे मैं दीवारों पर टांग नहीं पाती/ और तुम मुझे अपने वे किस्से सुनाना/ जिन्हें तुम डायरी में भी साझा नहीं करते।""[6] वह कभी नहीं लौटता, रह जाता है बस एक खालीपन.... अकेलापन...

यही अकेलापन 'एक छोटा सा सफर', 'खटखटाहट','सब ठीक है', 'रात भर', प्रेम-पत्र, 'डर का एक टुकड़ा', 'भूल जाती हूँ', 'पार कर लो', 'मन का हिस्सा', 'एक उदास लड़की' में दिखता है। एक उदास लड़की कविता 'तीसरी कसम' के हीरामन और हीराबाई की याद दिलाती है। 'कोसी के घटवार' के गुसाई की याद दिलाती है। निपट अकेलापन है इन कविताओं में। निर्जन एकाकीपन। अकेले-अकेले 'बीत' जाने के दुख और असहायता को 'भूस्खलन' कविता के माध्यम से कवयित्री अभिव्यक्त करती हैं। 'यादों के धागे' 'बीच का जंगल', 'तुम्हारा एक टुकड़ा', 'बिछुड़न', 'अप्रैल का महीना', 'जमना-पिघलना' इन सभी कविताओं में यह अकेलापन पसरा हुआ है।

'डर' कविता में भी अकेलापन है। उसका एहसास और भय है। रिश्तों में डर घुला हुआ है लेकिन जंगल में डर नहीं है। जंगल सुरक्षित है, यह भाव आईनाम की 'जंगल' कविता में भी व्यक्त होता है। प्रकृति ने अपने दायरे में प्राकृतिक किस्म के डर बनाए हुए हैं। उसमें कोई भेद-भाव नहीं है लेकिन मनुष्यों के बनाए भय में भेद-भाव है। एक किस्म का अन्याय है। इसलिए कवयित्री इस 'डर' से डरने की बात करती है। इस डर का प्रतिरोध भी आईनाम की कविताओं में दिखता है। 'मशाल' कविता में लेखिका प्रतिरोध की मशाल के माध्यम से अन्याय का प्रतिकार करने का साहस जुटाती है और साथ ही वह अपने भीतर जड़ जमाये बैठे 'डर' से भी लड़ती है।

यशोदा की हमजिंस, राधा की बेटी[7]

'कब्जा' कविता में लेखिका पितृसत्ता और उससे लड़ने को प्रकृति के विभिन्न उपमानों के माध्यम से अभिव्यक्त करती है। "सुनने में यह आता है कि/ हक़ के आगे बनी दीवारों की/ उम्र नहीं होती।"[8] 'रुचि' कविता भी इसी मिजाज की कविता है। 'बातें' कविता भी स्त्री जीवन के एक अलग पक्ष को रूपायित करती है। इस कविता की संरचना और भावाभिव्यक्ति पर अनामिका और आलोकधन्वा का प्रभाव दिखता है। नए-नए प्रतीकों के माध्यम से लेखिका ने स्त्री मुक्ति के सपने को रूपायित किया है। 'नेल पोलिश के नए रंग' कविता में नेल पोलिश के माध्यम से लेखिका ने स्त्रियों की पीढ़ियों को आत्मविश्वास से लबरेज होते हुए दिखाया है। 'कीट' और 'मैं एक पौधा' कविता में भी स्त्री जीवन, उसके अकेलेपन और उसके बंधनों को लेखिका ने अभिव्यक्त किया है।

आईनाम की कविताओं में स्त्रियों के जीवन की सामान्य समस्याओं के बारे में अभिव्यक्ति तो मिलती ही है, इसके साथ ही विशिष्ट तौर पर अरुणाचल प्रदेश के जनजातीय समाज में स्त्रियों के जीवन, उनकी समस्याओं और उनकी रोज़मर्रा की चुनौतियों को उन्होंने बहुत मर्मपूर्ण तरीके से अभिव्यक्त किया है। 'स्त्री का रक्त', और 'आज़ाद लड़की' ऐसी ही कविताएं हैं। जनजातीय समाजों की स्त्रियों के जीवन के बारे में बहुत सरलीकरण किया जाता है। आईनाम इस सरलीकरण के घेरे को तोड़ती हैं। पुरुष और स्त्री को लेकर जो आधारभूत मान्यताएँ हैं, उनमें ही बुनियादी तौर पर भेद-भाव है। लेखिका लिखती हैं, "पुरुष का रक्त शुद्ध होता है/ देशी घी की तरह/वह पोखर का पानी है/ जिसे झरनों ने कभी छेड़ा नहीं है..... स्त्री के रक्त का क्या है/ उनके रगों में तो आधा खून आधा पानी है/ जो पूरी तरह से लाल भी नहीं है/ जो अपूर्ण है, अशुद्ध है/ इसलिए स्त्री के हक़ में/ परायेपन का तमगा मल दिया जाता है/ ऐसा मुझे समझाया जा रहा है।"[9]

सामूहिक दुख की अभिव्यक्ति में भी लेखिका का निजत्व झलक उठता है। स्त्री के दुख की अभिव्यक्ति 'बेटी' कविता में मिलती है। इस कविता में आत्मनिर्भरता, आत्मीयता, पीड़ा और अकेलापन एक साथ प्रकट होता है। "मैं चाहती हूँ कि वह रक्त बह जाए/ जिनमें हज़ारों-सालों के दर्द घुले हैं/ मैं चाहती हूँ कि वह रक्त बह कर/ मुझे मेरे रक्त का गहरा लाल रंग दिखाए।"[10] इस निजत्व का एक रूप 'गुलदान' कविता में दिखाई देता है। "पर तुम यह न भूलना/ कि तुम भी एक गुलदान हो/ इन्हें भी सँवारो, महकने दो।"[11] लेखिका को इस अकेलेपन से, इस अनकहे बंधन से मुक्ति भी चाहिए। लेखिका लिखती हैं, "मैं अपने दाव के धार खुद तेज करूंगी/ और सदियों के अपने बंधन काट डालूँगी।"[12]

अरुणाचल प्रदेश के हिंदी कवियों की कविताओं में 'शास्त्र' को लेकर बहस की जा सकती है। आईनाम की कविताएँ इस मोर्चे पर भी अपनी कोमलता से मन को छू लेती हैं। बहुत ही नाजुक और मार्मिक उपमाओं का प्रयोग इन कविताओं में देखने को मिलता है। ये उपमाएँ इतने सहज भाव से कविता में प्रकट होती हैं जितनी सहजता से किसी कैशोर्य मन में प्रेम। "और एक अधजली मोमबत्ती जैसी मन की पीर/ जो जलती है, पिघलती है, जम जाती है/ और फिर जलने लगती है।"[13]

आईनाम की कविताओं में स्त्री-जीवन अलग-अलग रंगों में अभिव्यक्त हुआ है। इसमें रंग भी है और बदरंग भी। उदासी और अकेलापन है तो गिर-गिर कर संभलने की उम्मीद भी है। लगातार हारने के बीच में 'जब तक हैं, तब तक डटे रहेंगे/ और अगर किनारे कर दिये जाएँ/ तो हौसलों और उम्मीदों के बीज/ हम अगली पीढ़ी को दे आएंगे/ हम फिर-फिर खेलेंगे/ स्त्री-जीवन का यह खेल।"[14] कविता का यह भाव हमें निर्मला पुतुल की याद दिलाता है।

पाश की कविता 'मैं घास हूँ' की तर्ज पर आईनाम की एक कविता है,'मैं पेड़ हूँ'। इस कविता में कवयित्री उसी भाव को व्यक्त करती है, जिसे पाश अपनी कविता में करते हैं। आईनाम की इस कविता में उम्मीद है। एक पराजय का भाव है लेकिन पलायन की दैन्यता नहीं है। 'मैं समुद्र से मिलने जाऊँगी' कविता पर आलोक धन्वा की कविता 'भागी हुई लड़कियां' का प्रभाव दिखता है। आईनाम की कविताओं के बारे में एक और बात कही जानी चाहिए कि उनकी कई कविताओं पर हिंदी तथा अन्य भाषाओं के कवियों की कविताओं का प्रभाव दिखता है। यहाँ तक कि उनके यहाँ अनामिका, आलोक धन्वा, निर्मला पुतुल और पाश का भी प्रभाव देखा जा सकता है। इस प्रभाव को यूं ग्रहण किया जाना चाहिए कि साहित्य रचना में एक अमूर्त निरंतरता रहती ही है। समय की नदी के समान ही साहित्य की नदी में भी एक प्रवाह और प्रभाव रहता है।

स्त्री जीवन में आत्मनिर्भरता का बहुत महत्त्व है। मनुष्य के जीवन में भी इसका बड़ा महत्त्व है। बच्चे और बूढ़े प्राकृतिक कारणों से निर्भर होते हैं किंतु स्त्री के जीवन को तो व्यवस्था के द्वारा पराधीन बनाया गया है। उसकी यह पराधीनता ही उसके मानसिक और शारीरिक शोषण का आधार है। 'ओ नन्हीं चिड़िया' कविता यह ताकीद करती है कि स्त्रियों को अपना जीवन आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता के साथ जीना चाहिए। 'संतान' कविता में भी स्त्री जीवन और पितृसत्ता से एक उदास सी मुठभेड़ दिखती है। एक लड़की के सपने परदों की तरह हो जाते हैं। उड़ना उनकी फितरत में होता है लेकिन टंगना उनकी नियति बन जाती है। उनके जिम्मे यही काम रह जाता है कि वे परिवार की 'मर्यादा' की रक्षा करें। वही 'मरजाद' जिसकी मार खाया हुआ होरी कभी संभल न सका। वही 'मरजाद' जिसकी मार खाई हुई लड़कियां या तो खुद को खत्म कर लेती हैं या 'भाग' जाती हैं। लेखिका लिखती हैं, "वह भाग नहीं रही है/ वह आजाद हो रही है।"[15]

स्त्री-पुरुष संबंधों में आईनाम की दृष्टि आधुनिक और समतावादी है। वे लिखती हैं, "एक सवाल पूछूँ- क्या तुम्हें साथ चलना आता है/ साइकिल के पहिये जैसा साथ चलना नहीं/ एक जोड़ी चप्पल जैसा/ साथ चलना/ कभी तुम आगे/ कभी मैं आगे।"[16] मुक्ति का रास्ता कभी अकेले न तो बनता है और न ही तय होता है। इस साझेदारी की बात दुनिया के सभी रचनाकारों ने की है। आईनाम की कविता 'टाँके लगा लेती हूँ' इसी साझेदारी की बात करती है।

'अलसाई सी' एक भिन्न तरह की कविता है। एक स्त्री के जीवन में यह समय बमुश्किल ही आता है कि वह अलसाई सी रहे। वह देखती है कि प्रकृति की चीजें वक्त की पाबंद हैं। जिम्मेदारियाँ स्त्री को भी प्रकृति जैसा ही बना देती हैं। ऐसे में 'अपना कमरा' और 'अपना समय' उसे मिलता ही नहीं है। इस दृष्टि से देखें तो यह कविता स्त्री जीवन की मुक्ति के फलसफे को बहुत ही सरल अंदाज में बयान करती है।

ये दुनिया...

सामाजिक जीवन की विडंबनाओं पर भी आईनाम ने कुछ कविताएँ लिखी हैं। 'अटका हुआ' कविता एक ऐसी पीढ़ी के बारे में है जो शहर और गाँव के द्वंद्व में उलझी हुई है। वह कुछ छोड़ नहीं पा रही और कुछ स्वीकार नहीं कर पा रही है। यह समस्या हर उस पीढ़ी की होती है, जो कालांतरण के दौर में जवान होती है। ऐसी ही कविता है,'मेरा गाँव जवान हो रहा है।' सामाजिक सरोकारों से भरी एक कविता 'पहाड़' है। पहाड़ों की विशालता, अकेलापन और उदारता पर लिखते हुए लेखिका चाहती है कि पहाड़ थोड़ा फौलादी भी होने चाहिए ताकि उनको उजाड़ने वालों के मन में खौफ रहे। हालांकि 'खौफ' किसी सभ्यता-संस्कृति को बचाने का सर्वोत्तम तरीका नहीं है, क्योंकि खौफ का असर प्रभावी हो सकता है लेकिन दूरगामी नहीं होता। समाज का नैतिक विकास ही वह सर्वोत्तम तरीका है जिससे मनुष्यता और प्रकृति दोनों की रक्षा हो सकेगी। 'सर्द रातें' कविता की चिंता भी हमसे नैतिक जागृति की मांग करती है। आईनाम की कुछ कविताओं में यह सामाजिक सरोकार, एक वैश्विक चिंता में बदल जाता है। यह चिंता बहुत ही मर्मपूर्ण तरीके से 'हम शर्मिंदा हैं' कविता में अभिव्यक्त होती है। वे लिखती हैं, "मैंने सुना है कि पृथ्वी घूमती है/ और हमें भनक तक लगने नहीं देती है/ मैं शर्मिंदा हूँ/ पृथ्वी के इस स्नेह को/ हम-तुम जिस रूप में लौटा रहे हैं।"[17] इस क्रम में आईनाम की एक बहुत अच्छी कविता 'युद्ध' है। हम उस दौर में हैं जिसमें युद्धों को रोमांच की तरह देखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है और शासक वर्ग अपने स्वार्थों के कारण उसे बढ़ावा देता है। सच्चाई यह है कि मानव जाति ने महामारियों या प्राकृतिक आपदाओं से कहीं ज्यादा मौतें और नुकसान युद्धों के कारण देखा है। युद्ध मानवता के क्षरण की महागाथा है। आईनाम लिखती हैं, "जिसने कल ही कटहल का पौधा लगाया है/ जिसे अभी-अभी किसी से प्रेम हो गया हो/ उन्हें युद्ध के परिणामों से क्या/ युद्ध के दौरान ही वे तो हार चुके होते हैं/ युद्ध का परिणाम तो बस अखबारों/ और इतिहास के लिए होता है।"[18] यह कविता आलोक धन्वा की कविता 'सफ़ेद रात' की याद दिलाती है। सामाजिक अन्याय और असुरक्षा किसी जादू या प्रार्थना से ठीक नहीं होता। कोई जादू ऐसा नहीं बन सका और न ही ऐसी कोई प्रार्थना गाई गई है जो दुख और अन्याय से पीड़ित समाज को एक बेहतर दुनिया दे सके। 'सड़क और बच्चे' कविता अव्यक्त तरीके से इस बात को व्यक्त करती है।

और अंत में, आने वाले दिनों के सफीरों के नाम[19]...

आईनाम की कविताएँ अकेलेपन की कविताएँ हैं, अकेलेपन से लड़ने की कविताएँ हैं। क्योंकि कोई तब तक अकेला नहीं होता है 'जब तक कि दूर पहाड़ी के उस पार/ कोई तुम्हें भी याद करता हो/ सुबह, दोपहर और शाम।"[20]

संदर्भ ग्रंथ सूची-

[1]पापा मेरे, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 48

[2]मीत, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 13

[3]शहर न बन जाऊँ, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 102

[4]ओ मीत!, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 100

[5]टूटन, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 18

[6]शाम की चाय, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 51

[7] 'प्यासा' फिल्म के एक गीत की पंक्तियाँ, साहिर लुधियानवी।

[8]कब्जा, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ-36

[9]स्त्री का रक्त, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 35
[10]बेटी, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 16
[11]गुलदान, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 21
[12]बेटी, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 17
[13]दादी की पोटली, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 22
[14]हम फिर खेलेंगे, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 24
[15]दाह दो, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 29
[16]साथ चलना आता है?, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 28
[17]हम शर्मिंदा हैं, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 69
[18]युद्ध, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 77
[19]इंतिसाब, फ़ैज़ अहमद फ़ैज़, सारे सुख़न हमारे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
[20]अकेला होना, मीत, आईनाम इरिंग, पुस्तकनामा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2023, पृष्ठ- 112

*(**लेखकीय परिचय :** डॉ. अभिषेक कुमार यादव राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। इससे पूर्व आप भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में फेलो रह चुके हैं। आपकी प्रकाशित पुस्तक 'झारखण्ड : अँधेरे से साक्षात्कार' काफी चर्चित रही है। मोबा:9436682837, ई-मेल : ykabhishek@gmail.com)*